14 जनवरी, 2010 को 1600 बजे दरबार हॉल, होटल ताज पैलेस, नई दिल्ली में वर्ष 2007 के जवाहरलाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार वितरण समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

जवाहर लाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार के निर्णायक मंडल के अध्यक्ष के रूप में मेरा यह सौभाग्य है कि मैं आइसलैंड के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ओलाफुर राग्नर ग्रिम्स्सों को वर्ष 2007 का जवाहरलाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सदभावना पुरस्कार प्रदान करने वाले निर्णायक मंडल के सदस्यों के मतैक्य से लिए गए निर्णय का हिस्सा बना।

आज हमारे लिए सचमुच यह विशेष गौरव की बात है कि राष्ट्रपति ग्रिम्स्सों उस अत्यंत प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए हमारे बीच उपस्थित हैं जिस पर महान राजनीतिज्ञ और आधुनिक भारत के निर्माता जवाहरलाल नेहरू का नाम अंकित है। एक बार नेहरू जी ने कहा था कि "समय की पैमाइश इससे नहीं की जाती है कि आपने कितने वर्ष गुजार लिए हैं, अपितु इससे की जाती है कि आप क्या करते हैं, क्या महसूस करते हैं और आपकी क्या उपलब्धियाँ हैं।" इसी कसौटी पर आपको इस पुरस्कार के योग्य पाया गया है।

आप एक युवा सांसद के रूप में 1983 में पहली बार भारत आए थे और तब से आप भारत, इसके नेतृत्व तथा अंतरराष्ट्रीय सदभावना का शुद्ध रूप से संवर्द्धन करने में घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं। छह राष्ट्रों की शांति पहल में एसोसिएशन ऑफ पार्लियामेंटेरियंस फॉर ग्लोबल एक्शन के चेयरमैन और बाद में अंतरराष्ट्रीय प्रेजीडेंट के तौर पर अंतरराष्ट्रीय शांति और सद्भावना बनाने के लिए किए गए आपके अनुकरणीय कार्य के साथ-साथ काउंसिल ऑफ यूरोप के संसदीय सम्मेलन में किए गए आपके महत्वपूर्ण योगदान, जिसने उत्तरी-दक्षिणी संबंधों के लिए किए जाने वाले कार्य का आधार सृजित किया, को हमने देखा है।

आपने विश्वभर की सौ से अधिक संसदों के निर्वाचित प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाकर उनकी ऊर्जा और प्रतिभा को वैश्विक सरोकारों के मुद्दों जैसे शांति, लोकतंत्र, विधि सम्मत शासन, मानवाधिकारों, सतत विकास और जनसंख्या संबंधी मुद्दों पर केन्द्रित किया।

आपने अपने व्यक्तिगत उदाहरण से राजनेताओं को जनता और राजनीतिक दलों को बाँटने वाले मुद्दों से परे जाकर साझे हितों के लिए राजनीति करने के लिए प्रोत्साहित किया। आप ऐसे देश का नेतृत्व कर रहे हैं जो विश्व में लोकतंत्र का संवर्द्धन करने के लिए अपनी बेशकीमती भूमिका हेतु प्रख्यात है।

महामहिम,

जवाहरलाल नेहरू ने आवश्यक संवैधानिक एवं वैधानिक उपबंध तैयार कर, लोकतांत्रिक संस्थाओं का सृजन एवं सम्मान कर तथा अपनी ईमानदारी से यह सुनिश्चित करके कि भारत जैसा विकासशील देश तानाशाही के मोह में न पड़े, लड़खड़ाते गणतंत्र में लोकतंत्र को सुदृढ़ करने का कार्य किया। आपने पिछले अनेक वर्षों से इसी प्रकार लोकतांत्रिक संव्यवहार, विश्व शांति और स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्धता के साथ सतत रूप से कार्य किया है।

मैं अब भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक और पुरस्कार के निर्णायक मंडल के सचिव को प्रशस्ति पत्र के वाचन के लिए आमंत्रित करता हूँ तथा भारत की राष्ट्रपति को आमंत्रित करता हूँ कि वह आइसलैंड के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ओलाफुर राग्नर ग्रिम्स्सों को वर्ष 2007 का जवाहरलाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार प्रदान करें।

****